REPORT ON
EDUCATIONAL TOUR & MEASURED DRAWING CAMP AT BUNDI, RAJASTHAN

Place: Bundi, Rajasthan
Date: 30TH SEP'17-5TH OCT'17
Class: 2nd Yr , 3rd sem (Batch 2016-21)
Number of students: 51
Faculty: Ar. Yash Pratap Singh Shekhawat, Ar. Manas Sharma, Ar. Shweta Mehta

The trip to Bundi was planned as an exercise to teach the students of 2nd year, measure drawings. Bundi is a city famous for its step-wells / bawadi / kunds. Also iconic about Bundi is the reminiscent of historical Rajasthani architecture in the city. The narrow lanes are trespassed with religious structures, shops, small hotels, small eateries and residences.

After reaching Bundi on 30th afternoon, faculty and students spent the day exploring the city; its lifestyle and inherent nature. 6 streets were indentified for being measured and drafted, in an attempt to study the lifestyle of this historical town. Also identified were 8 bawadi's and 1 temple (Lakshminath temple) for a measure drawing study. These were:

- Abhainathji ki bawadi
- Bohroji ka kund
- Bhawaldi bawadi
- Lakshminath temple bawadi
- Nagar – Sagar kunds
- Dhabhaiji ka kund
- Nahardooj ki bawadi
- Khoja darwaza bawadi
-

1st and 2nd (half day) were spent studying and measure drawing the streets in groups of 5-6 students. Work would start early at 7:30am, with students heading to their respective streets, measuring and sketching its details till about 12:00noon. Post lunch and after a brief break work would begin again at 4 and go on till dusk when the students would return at 7:00pm. The faculty was spending its time going from one group to other during the day so as to be able to guide the students while they worked. Post dinner 9:00pm would be a review of the day's work.
2nd,3rd and 4th were spent in measuring drawing the bawadi's and temple allotted to each group. All architectural details, motifs and features were being measured and studied in detail. These needed to be presented in the form of auto-cad drawings.
5th was a fun day when students visited Bundi fort, Bhimlat and Gadria Mahadev for a fun day before heading to Jaipur.

The trip was designed firstly, to teach students to measure a structure and replicate it in the form of drawings. Secondly, study the architectural details of historical rajasthani settlements. Lastly, be able to establish a relationship between cityscape and its resident's lifestyle.

In addition to all study and fun related activities, students were made to realize their social responsibility towards the city. “Shramdan” in the form of cleaning for the Abhaynathji ki bawadi was carried out on 4th morning. The students participated in full strength to support this noble cause.

जयपुर से बूंदी की बावड़ी का रिसर्च करने आए छात्रों ने कहा-

बाहर से आकर हम यहां की विरासत से लगाव रख सकते हैं तो बूंदीवासी ऐसा क्यों नहीं करते?

बूंदी| शहर के कुएं, बावड़ियों पर अध्ययन कर रहे जयपुर के विद्यार्थियों के दल गुरुवार को करीब 312 वर्ष पुरानी अभयनाथ महादेव की बावड़ी पर सफाई कर श्रमदान किया। श्रमदान को लेकर विद्यार्थियों में उत्साह नजर आया। विद्यार्थियों ने यहां की ऐतिहासिक धरोहर पर श्रमदान कर संदेश दिया कि अगर बाहर से आकर हम यहां की विरासत की दुर्दशा देखकर सफाई कार्य कर सकते हैं, तो यहां के लोग क्यों यह कार्य नहीं कर सकते। जयपुर के पूर्णिमा यूनिवर्सिटी के 52 स्टूडेंटस का दल पिछले पांच दिनों से शहर में कुएं-बावड़ियों पर अध्ययन कर स्केच, ड्रांइग बना रहे थे। विद्यार्थियों के दल ने कहा कि हर कार्य के लिए सिर्फ प्रशासन, सरकार के भरोसे हमें नहीं रहना चाहिए। शहर में विभिन्न सामाजिक संगठन है, जो शायद सप्ताह दर सप्ताह अलग-अलग स्थानों पर श्रमदान कर सफाई कार्य करें शहर की ऐतिहासिक धरोहरें सहित शहर स्वच्छ, सुंदर नजर आएं, साथ ही इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। श्रमदान करने वालों में गुरुवार को

बूंदी. बावड़ी पर श्रमदान कर सफाई करते हुए स्टूडेंटस।

उत्कृष पांडे, शिवम पांडे, आयुषी चौधरी, दीपक यादव, नुपुर शर्मा, मानस शर्मा, दिनेश सुथार, दीपक शर्मा, हरिओम विधुरी, अमल राना, स्नेहप्रिया मुखर्जी, गौरव वर्मा, राजेंद्र सिंह, तन्मय मोंडल, हर्षवर्द्धन सिंह चौहान, सौरभ शर्मा, धर्मेंद्र सिंह, दिशा यादव ने बावड़ी पर सफाई कर श्रमदान किया। इस दौरान दल प्रभारी एचओडी यशप्रताप शेखावत, श्वेता मेहता, मानस शर्मा, मैग्नीफिशिंट पारूल गुप्ता, सुरेंद्र वर्मा ने बताया कि हेरिटेज सिटी, पर्यटन नगरी, छोटी काशी, क्वीन ऑफ हाड़ौती के नाम से प्रसिद्ध बूंदी शहर में छह दिन तक भ्रमण कर यहां की विरासत देखी। सभी रियासकालीन धरोहरों को संरक्षण की दरकरार है। बावड़ियों, कुंड़ों में कचरा डाला जा रहा है, यहां के लोगों के लिए शहर की धरोहरों की वैल्यू शायद कम है। सब-कुछ सरकार पर छोड़ना तो गलत है, शहर के लोगों को भी जागरूक होना होगा ताकि धरोहरों को साफ सुथरा रखकर बचाया जा सके।

इनका कहना है

बूंदी शहर में विरासत का खजाना है, जरूरत है तो सिर्फ उन्हें सहेजने की।
आफताब खान, छात्र

यहां की अभयनाथ महादेव की बावड़ी जो आज भी यहां के लोगों के लिए पेयजल स्त्रोत है। यहां गंदगी नजर आई तो हमारे पास उपलब्ध संसाधनों से हमने सफाई करने का प्रयास किया है।
-नितिन यादव, छात्र

यहां के कुएं-बावड़ियों पर रिसर्च करते-करते हमें इनसे लगाव हो गया था, प्रोजेक्ट के दौरान सोचा कि विजिट के अंतिम दिन बावड़ी पर श्रमदान करेंगे।
- निर्मल कंवर, छात्रा

प्रोजेक्ट के दौरान 300 साल पुरानी अभयनाथ महादेव की बावड़ी पर मेजरमेंट, डायमेंशन तैयार करने आए तो यहां हमने श्रमदान कर गंदगी तथा झाड़-झंझाड़ साफ कर दिया।
-शैली दादरवाल, छात्रा

बूंदी के मिजाज और स्थापत्य कला पर अध्ययन कर रहे यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी, बोले- यहां की कला है बेजोड़

विद्यार्थी गली-गली घूमकर जान रहे यहां का माहौल, कुए-बावड़ियों की बना रहे स्कैच व ड्राइंग

बूंदी| जयपुर की 52 यूनिवर्सिटी विद्यार्थी इन दिनों बूंदी में हैं। आर्किटेक्चर के ये स्टुडेंट्स शहर के मिजाज और यहां की बेमिसाल स्थापत्य कला को समेटने-समझने आए हुए हैं। वे यहां के रियासतकालीन कुंड-बावड़ियों, मंदिरों पर स्टडी कर रहे हैं। इनमें शहर के नागर-सागर कुंड, बोहराजी कुंड, बावलदी बावड़ी, भावाई कुंड, गुला बावड़ी, नाहरघूंस बावड़ी, खोजागेट बावड़ी, लक्ष्मीनाथ मंदिर की बनावट व शैली का बारीकी से स्टडी कर रहे हैं। इस टीम ने बावड़ियों, कुंडों, मंदिर की स्थापत्य कला की डायमेंशन, मेजरमेंट लेकर शीट्स पर ड्राइंग बनाई है। अलग-अलग दलों में बंटे ये स्टुडेंट्स शहर के बाजारों, गलियों में घूमकर यहां का माहौल कैसा है, कौनसी गली में शाम का तो, कौनसी में सुबह का वर्चस्व क्या है...सहित बूंदी के करेक्टर को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

की नाप-जोख, मेजरमेंट लेकर बनाई ड्राइंग: 52 छात्र-छात्राओं के अलग-अलग दल रियासतकालीन निर्माण की तकनीक को बारीकी से देख-समझ रहे हैं, इन्होंने लक्ष्मीनाथ मंदिर, बावलदी बावड़ी, नागर-सागर कुंड आदि स्थानों पर फीते से नाप-जोख कर आधुनिक उपकरणों से निर्माण की शैली व बनावट की डिजाइन तैयार कर रहे हैं। यहां लगाए पत्थरों को नापकर उनका मेजरमेंट ले रहे हैं। लेपटॉप व पेपर में बावड़ी व कुंड का

बूंदी. लक्ष्मीनाथ मंदिर में पत्थरों की नाप-चौख करते हुए।

नक्शा, स्कैच एवं कुछ ड्राइंग तैयार कर रहे हैं। वे बड़ी उत्सुकता के साथ बारीकियां समझने-संजोने का प्रयास किया कि आखिर ऐसी क्या चीज है जो इन पत्थरों को वर्षों बाद भी जोड़े हुए हैं।

स्थापत्य कला ने किया आकर्षित: लक्ष्मीनाथ मंदिर में मेजरमेंट, ड्राइंग तैयार कर रही छात्रा तन्वी सेन, सौम्या गोस्वामी, मीनल जैन, आयुषी सक्सेना, हिमा संचान, शिवानी अग्रवाल, छात्र आयुष, शिवम पांडे, गौरव वर्मा, दीपक शर्मा ने बताया कि रियासतकाल में बने मंदिर की बनावट बहुत सुंदर है। वहीं बावलदी बावड़ी में मेजरमेंट ले रहे दल के दिनेश सुथार, दिशा यादव, समीक्षा गोगई, शैलीद अग्रवाल, दीपक यादव, किरण तनमले, अंकिता शर्मा, हर्षवर्द्धन ने बताया कि यहां के जाली, दरवाजे, झरोखे बेहद खूबसूरत हैं। बूंदी शहर फोटो लोकेशन के लिहाज से बेहद सुंदर जगह है। टीम के लिए रियासतकालीन निर्माण में पत्थरों को सपोर्ट देने के लिए लगाए गए ब्रेकेट भी चर्चा का विषय रहे। वे अपने मोबाइल में भी इन सभी को कैद कर कर हैं।

रखरखाव ठीक हो: दल प्रभारी एचओडी यशप्रताप शेखावत, श्वेता मेहता, मानस शर्मा, मैग्नीफिशियंट पारूल गुप्ता ने बताया कि सिटी ऑफ वैल्स के नाम से प्रसिद्ध बूंदी शहर में चार दिन से भ्रमण कर रहे हैं। यहां के लोगों के लिए शहर की धरोहरों की वैल्यू शायद कम है। सब-कुछ सरकार पर छोड़ना तो गलत है, शहर के लोगों को भी जागरूक होना होगा, ताकि धरोहरों को साफ-सुथरा रखकर बचाया जा सके।

एचओडी यशप्रताप ने बताया कि स्टूडेंट्स ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कर बहुत कुछ सीख रहे हैं। जल्द ही एक बुक प्रकाशित की जाएगी, जिसमें बूंदी शहर के इतिहास, शहर का मिजाज, बनावट, शैली लेखन एवं तैयार किए जा रहे स्केच शामिल किए जाएंगे।

मिलती है इतिहास की जानकारी: टूर आर्गेनाइजर मैग्निफिसेंट पारूल गुप्ता ने बताया कि आर्किटेक्चर के सैकंड ईयर के स्टुडेंट्स का यह आर्किटेक्चर से जुड़े विभिन्न पहलुओं से रूबरू करवाने के लिए शैक्षणिक दौरा है। इसके जरिए आर्किटेक्चर से जुड़े पहलुओं, पुरातन आर्किटेक्ट प्रविधि, अर्बन प्लानिंग सहित मॉडर्न आर्किटेक्चर के बारे में बेहतर जानकारी मिलती है।